दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ & Fax : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : digvijayans@gmail.com
: dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

पत्रांक : /2018–19 दिनांक : 19.09.2018

समाचार स्वरूप प्रकाशनार्थ

आज दिनांक 19 सितम्बर 2018 को दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय में युगद्रष्टा महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यानमाला के पॉचवें दिन वनस्पति विज्ञान विभाग द्वारा प्रायोजित 'पृथ्वी ग्रह की वनस्पतियॉ' विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए प्रो. वी.एन. पाण्डेय, विभागाध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर ने जीवन की उत्पत्ति तथा मानव विकास के लिए वनस्पतियों की प्रासंगिकता को अत्यंत अनिवार्य तत्व बताया तथा कहा कि जल और वनस्पति प्रकृति की दो ऐसी निधियॉ है, जिनके बिना मानव अस्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती। पेड़–पौधे इस धरा के साक्षात ईश्वर स्वरूप हैं और यही कारण है कि भारत ही नही बल्कि विश्व की समस्त मानव सभ्यता का विकास जलाशय तथा वनस्पतियों के छॉव में ही हुआ। मनुष्य की मौलिक आवश्यकताएँ जैसे रोटी, कपड़ा और मकान यह सब वनस्पतियों की ही देन है। वनस्पतियॉ ही हमें पोषण के रूप में कार्बोहाड्रेट, विटामिन और मिनरल जैसे जैविक तत्व प्रदान करते हैं। सही अर्थों में पौधे हमारे पथ–प्रदर्शक होते हैं। जो प्रकृति के सभी झंझावतों को झेलते हुए उसके साथ समायोजन बनाकर मानव सहित जीव–जन्तुओं सभी को जीवन प्रदान करते हैं। पेड़ पौधो में वह शक्ति है, जो मानव मे नहीं। क्योकि पेड़–पौधे ही हमें सबकुछ प्रदान करते हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवन का कोई ऐसा पक्ष नहीं जिनमें पेड़, पौधे तथा वनस्पतियों की भूमिका न हो। यहॉ तक कि लकड़ी जलकर भी राख के रूप में संत–महात्माओं को विभूति के रूप में उन्हे देवत्व प्राप्त करने की शक्ति प्रदान करती है। यही कारण कि महात्मा बुद्ध जैसा महापुरूष ने ज्ञान प्राप्ति के लिए पीपल के वृक्ष को चुना, जिसमें आक्सीजन प्रदान करने की सर्वाधिक क्षमता होती है। पुनः उन्होने आगे कहा कि हर मनुष्य का

यह धर्म होना चाहिए कि पहले अपने आप को वनस्पतियों से जोड़े तथा इस जोड़ की सत्तता को कायम रखने के लिए निरंतरता का भाव कायम रखे, जो सृष्टि की अमरता के लिए परम आवश्यक है। यदि हम वनस्पतियों की क्षमता को अपने आप में जागृत कर लें तो विनाशक तत्व भी मेरा कुछ नही बिगाड़ सकता। अंत में उन्होने यह भी कहा कि हम अपनी सारी शक्तियों को सकारात्मक दिशा में जारी रखे तो जीवन के किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति असंभव नहीं। पौधे ही हमें जीवन में प्रेम, परोपकार, पोषण जैसे अनमोल तत्वों को प्रदान करते हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने भी प्रकृति प्रदत्त वनस्पतियों की महत्ता और प्रासंगिकता पर अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम का संचालन विभाग के प्रभारी श्री धर्मचन्द विश्वकर्मा ने किया तथा आभार ज्ञापन विभाग के वरिष्ठ उपाचार्य डॉ. परीक्षित सिंह ने किया।

कार्यक्रम में डॉ. इन्द्रमणि त्रिपाठी, डॉ. श्रीभगवान सिंह, डॉ. शशिप्रभा सिंह, डॉ. अर्चना सिंह, डॉ. कविता सिंह सहित छात्र–छात्रायें उपस्थित थे।

छठे दिवस का कार्यक्रम– दिनांक – 20.09.2018, समय – अपराह्न 01.00 बजे।
विषय– जैविक खेती–आज की आवश्यकता
मुख्य अतिथि - डॉ. आर.पी. सिंह
कार्यक्रम स्थल – संवाद कक्ष (दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर)।

डॉ.(मुरली मनोहर तिवारी)
सूचना एवं जनसम्पर्क प्रभारी
मोबाइल नं–9452879449

महाविद्यालय , गोरखपुर

युगद्रष्टा महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति
व्याख्यान-माला
डॉ० पी०के० सिंह

व्याख्यान-माला

व्याख्यान-माला